बी.एस.ओ.सी.-104 : भारत का समाजशास्त्र – II
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH/ BAFSO
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-104**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -104 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. भारतीय समाज की बहुलतावादी आधारशिलाओं का विविधता में एकता तथा समायोजन की संस्कृति के विशेष संदर्भ में समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 20

2. भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं की विवेचना कीजिए। सामाजिक परिवर्तन लाने में संस्कृतिकरण, पाश्चात्यीकरण तथा धर्मनिरपेक्षीकरण की भूमिका की व्याख्या कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. भारत में कृषक आंदोलनों की प्रमुख विशेषताओं एवं उनके महत्व की विवेचना कीजिए। 10

4. भारत में राष्ट्रवाद की प्रकृति एवं प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए। 10

5. कट्टरवाद (Fundamentalism) एवं सांप्रदायिकता (Communalism) में अंतर स्पष्ट कीजिए। भारतीय समाज पर इनके प्रभावों की चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. मैकाले का शिक्षा संबंधी मिनट 06

7. भारत की संवैधानिक आधारशिलाएँ 06

8. भारत में महिला आंदोलन 06

9. श्रमिक वर्ग के आंदोलन 06

10. संरक्षणात्मक भेदभाव 06

1. भारतीय समाज की बहुलतावादी आधारशिलाओं को विविधता में एकता तथा समायोजन की संस्कृति के विशेष संदर्भ में समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 20

उत्तर

भारतीय समाज की पहचान उसकी असाधारण बहुलता में निहित है। यहाँ विभिन्न भाषाओं, धर्मों, जातियों, जनजातियों, क्षेत्रों, जीवन-शैलियों और सांस्कृतिक परंपराओं के लोग एक साझा राजनीतिक तथा सामाजिक ढाँचे में रहते हैं। इस बहुलता को केवल अलग-अलग समुदायों की उपस्थिति के रूप में समझना पर्याप्त नहीं है। भारतीय समाज में उनके बीच संपर्क, आदान-प्रदान, संघर्ष और समायोजन की लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया भी चलती रही है। इसलिए 'विविधता में एकता' एक उपयोगी आदर्श होने के साथ-साथ निरंतर निर्मित होने वाली सामाजिक उपलब्धि है।

बहुलतावादी आधारशिलाओं का स्वरूप

भाषायी एवं क्षेत्रीय विविधता : देश में विभिन्न भाषा-परिवारों की भाषाएँ और अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं। भाषा साहित्य, लोकस्मृति, पहचान और क्षेत्रीय राजनीति का माध्यम है। अलग-अलग भाषायी समुदाय अपने विशिष्ट त्योहार, खान-पान और सांस्कृतिक प्रतीक रखते हैं। भाषायी राज्यों का गठन दिखाता है कि राष्ट्रीय ढाँचे में क्षेत्रीय पहचान को स्थान देकर भी एकता को मजबूत किया जा सकता है।

धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता : हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन तथा अन्य धार्मिक समुदायों के साथ अनेक लोकविश्वास और आदिवासी धार्मिक परंपराएँ विद्यमान हैं। त्योहार, तीर्थ, संगीत, स्थापत्य और भक्ति-सूफी परंपराओं ने परस्पर संवाद की संभावनाएँ विकसित की हैं। फिर भी धार्मिक समुदायों का अनुभव सदैव समान नहीं रहा; सत्ता और संसाधनों का वितरण उनके संबंधों पर प्रभाव डालता है।

जाति, वर्ग और सामाजिक स्तरीकरण : जातियाँ, उपजातियाँ, पेशागत समुदाय तथा विभिन्न आर्थिक वर्ग सामाजिक संगठन के महत्त्वपूर्ण अंग रहे हैं। जाति-आधारित अंतर्विवाह और सामाजिक दूरी ने विभाजन भी उत्पन्न किए। दूसरी ओर श्रम के आदान-प्रदान, स्थानीय बाजारों, राजनीतिक संगठनों तथा सामाजिक आंदोलनों ने परस्पर निर्भरता बढ़ाई। बहुलता को बराबरी से अलग नहीं किया जा सकता; जातिगत पदानुक्रम उसकी लोकतांत्रिक संभावनाओं को सीमित करता है।